नीति शतक



ॐ



लेखक
श्रेयाँश कुमार जैन
216 / 8 तालाब तिल्लो
जम्मू तवी–180002

Printed at : Amar Art Press Moti Bazar, Jammu. Ph. : 2547549

अपनी बात



जम्मू जैन समाज के अग्रणी, कर्णधार, धर्म प्रेमी, परोपकारी, दानवीर श्रीमान सुदर्शन कुमार जैनजी के परिवार से मेरा पुराना सम्बंध है। सुदर्शन जी अनेको धार्मिक व समाजिक संस्थाओं के संरक्षक है तथा समय-समय पर इनका मार्गदर्शन प्राप्त होता रहता है । चार बेटियों (परवीन, मीना, उर्मिल व मीना) तथा तीन बेटों (कीमती, देवेन्द्र, नरेन्द्र) मे कीमती लाल जी सबसे बडे हैं। कीमती लाल जी व धर्म पत्नि मधुजी भी दानवीरता को जीवन का अंग मानते है । इनके दो पुत्र गगन व राहत तथा एक पुत्री अंचल भी धार्मिक संस्कारों से ओत-प्रोत है ।

गगन रिद्धिमा के घर आचार्य श्री डा. शिव मुनिजी के आर्शीवाद से 25.09.07 को एक प्यारी सी बेटी ने जन्म लिया, जिसका नामकरण भी आचार्य प्रवर द्धारा ही 'निर्जरा' किया गया । आचार्य श्री द्धारा चलाये गये ध्यान योग-शुद्ध वीतराग सामायिक के कार्य में इनका भरपूर सहयोग रहता है ।

दूसरे जन्म दिवस के शुभ अवसर पर गगन रिद्धिमा ने अनेकों अनाथालयों, orphanage, sos Home, स्कूलों व वृद्धाश्रमों आदि में सेवा लगा कर, अपनी प्रिय बच्ची के लिये शुभाशीष प्राप्त किया । प्रभु से करबद्ध प्रार्थना है कि उनकी धर्म भावता में वृद्धि होवे तथा अन्य बन्धुओं को भी इसी प्रकार सेवा करने के लिये प्रेरणा मिले । इस अवसर पर मुझे यह नीति शतक लिखते हुये अत्यंत प्रसन्नता हो रही है ।

प्यारी दुलारी निर्जरा के लिए दीर्घायु व सुस्वास्थ्य की मंगल कामना के साथ ।

परम हितैषी
श्रेयाँश कुमार जैन
216/8 तालाब तिल्लो, जम्मू
94191–00743



1. सुप्रभात की सूर्य किरणों की लालिमा का तेज लिये।
2. पूनम की चाँदनी का शीतल प्रकाश लिऐ।।
3. मंगलमय हो जीवन का हर पल मज में दृढ़ विश्वास लिये ।
4. हम करे जन्म दिवस अभिनन्दन।।

प्रसन्नता का विषय है कि, श्री गगन रिद्धिमा की प्यारी बेटी निर्जरा का दूसरा जन्म दिवस है । इस शुभ अवसर पर विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी शाखा जम्मू के सभी केन्द्र परिवार के सदस्यों की ओर से हार्दिक व सप्रेम शुभकामनाएँ ।

परमपिता परमात्मासे प्रार्थना है, कि प्यारी निर्जरा शतायु हो तथा जीवन में सुख समृद्धि उसे पूर्णरूपेण प्राप्त हो ।

उल्लेखनीय है कि इनका पूरा परिवार धर्मनिष्ठ है । श्री गगनजी विवेकानन्द केन्द्र के युवा विंग के प्रभारी है । अन्यान्य धार्मिक सामाजिक आयोजनों में इनका सहयोग सराहनीय रहा है

स्वस्त्यरस्तु ते कुशल मस्तु चिरायुरस्तु
विद्या विवेक कृति कौशल सिद्धि रस्तु ।
ऐश्वर्यमस्तु बलमस्तु राष्ट्रभक्तिः सदाऽस्तु
वंशः सदैव भवता हि सुदीप्तोऽस्तु ।।

स्वस्थ्य रहने की कामना, कुशल एवं चिरायु रहने की कामना । विद्या, विवेक, कार्यकुशलता, ऐश्वर्य, बल, राष्ट्रभक्ति सदा विद्यमान रहे । वंश सदैव ही दीपक की भाँति प्रज्वलित रहकर जग को प्रकाश दे ।

शुभचिन्तक

ज्ञानचन्द सनहोत्रा
(विभाग प्रमुख)
एवं विवेकानन्द केन्द्र
परिवार – जम्मू



लाडली निर्जरा सुपुत्री श्री गगन जैन पोत्री श्री कीमती लाल जैन
प्रपौत्री श्री सुदशर्न कुमार जैन (उतर भारतीय अध्यक्ष श्री आत्मानन्द जैन महासभा)

द्वितीय जन्म–दिवस के पावन – प्रसंग पर हार्दिक शुभ कामना देते हुए बालिका के मंगलमय भविष्य की कामना करता हूँ ।

एक छोटी – बालिका के जन्म – दिवस पर हमारे सुश्रावक श्री श्रेयांस जैन की लेखनी से नीति–शतक का सृजन बालिका के सौभाग्य का प्रतीक है । इससे सभी को धर्म की प्ररेणा मिलेगी ।

पुण्यवती बालिका के द्वितीय–अवतरण दिवस पर सम्पूर्ण परिवार को हार्दिक बधाई देते हुए आह्लाद की अनुभूति कर रहा हूँ ।

आपका

रमणीक मुनि

25 / 09 / 08



भाग्यवान श्रीमान गगन जी, श्री निर्जरा आदि परिवार,

धर्म लाभ ! धर्म लाभ! धर्म लाभ !

मानव जीवन की प्राप्ति के पश्चात यदि इसे सफल न कर पाए तो वैसा ही है कि मुक्ति के रास्ते पर खड़े तो रहे मगर चले नहीं ।

मानव जीवन की प्राप्ति के पश्चात यदि गलत कार्य ही करते रहे तो वैसा ही है कि मुक्ति के रास्ते को छोड़ हम दुर्गति के रास्ते पर चल पड़े ।

मानव जीवन की प्राप्ति के पश्चात यदि हमने सुकृत पुण्य कार्य किए तो वैसा ही है कि मुक्ति के रास्ते को छोड़ हम सद्‌गति के रास्ते पर चले ।

और ....

मानव जीवन की प्राप्ति के पश्चात हम भद्रिक्ता, विनम्रता औद सदाशयता पूर्वक स्वकर्त्तव्य निभाते रहे तो वैसा ही है कि मुक्ति के रास्ते पर हम चले नही, मगर उसे देखते रहे । सद्गति के रास्ते पर भी नहीं बढ़े, तो दुर्गति के रास्ते पर भी नहीं चले, मात्र मानवता को जीते हुए स्वंय को मुक्ति के लिए समद्ध करते रहे ।

मानव जीवन तो चौराहा है, जिधर चाहो उधर बढ़ो । जिध र चाहो उधर ही बढ़ सकते हो । बढ़ सकते हो ।

धर्म धुरंधर

प्रार्थना

जो सुन ली गई

मैंने भगवान से मांगी शक्ति,
उसने मुझे दी कठिनाईयाँ,
हिम्मत बढ़ाने के लिए ।

मैंने भगवान से मांगी बुद्धि,
उसने मुझे दी उलझनें,
सुलझाने के लिए ।

मैंने भगवान से मांगी समृद्धि,
उसने मुझे दी समझ,
काम करने के लिए ।

मैंने भगवान से मांगा प्यार,
उसने मुझे दिए दुःखी लोग,
मदद करने के लिए ।

मैंने भगवान से मांगी हिम्मत,
उसने मुझे दी परेशानियाँ,
उबर पाने के लिए ।

मैंने भगवान से मांगा वरदान,
उसने मुझे दिए अवसर,
उन्हें पाने के लिए ।

वो मुझे नहीं मिला जो मैंने मांगा था,
मुझे वो मिल गया जो मुझे चाहिये था ।

शुभकामनाओं सहित
अनूप जैन – सरिता जैन
जालन्धर ।

नीति शतक

जग में तो गुरू एक है, मात पिता सुत ओ नारी।
गुरूवर जग से है तारते, जग दुःख जंजाल मे डारी ।।1।।
गुरू महिमा बडी महान, नही कर सके इसका बखान।
जो ज्ञान चक्षु को खोलते वही सद्गुरू गुणोंकी खान।।2।।

सुबह सबेरे उठकर के सब, गुरूवर का गुणगान करें ।
जग से पार उतारे जो भी, उस गुरू को ही नमन करें ।।3।।
घट में जब तक प्राण है, करिये तब तक ध्यान ।
खत्म हुए जब सांस तो, फिर क्या करेगा ध्यान ।।4।।

कल परसों करता रहा, क्यों न किया तू ध्यान
यौवन बाल चला गया, वृद्धपने नहीं ध्यान ।।5।।
बचपन में खेला किया, यौवन में था विषय किया ।
बुढापे में तृष्णा बढी, फिर कैसे कल्याण किया ।।6।।

संत पुरूष कराते ध्यान, निजपर का अंत रहै जान ।
कृपा वर्षा होती उनकी, सुख दुःख माना एक समान ।।7।।
विषय भोग में रत् रहा, बना रहा आशा का दास ।
विषयों को वश में किया, फिर जग बनेगा तेरा दास ।।8।।

मुश्किल से नर भव मिला, किया नहीं अपना उद्धार ।
नर चोला जब बदल गया, फिर कैसे होगा उद्धार ।।9।।
संत कराते है जीव को, सन्तोषामृत पान।
प्रभु दर्श को जो दिखावे, वे होते है संत महान ।।10।।

कर्मो के वश जीव है, ले अपना जन्म सुधार ।
गर सद्कर्म नहीं किया, फिर कैसे होगा उद्धार ।।11।।
किसका धन कौवा लेत है, कोयल किसको देय ।
मीठी वाणी बोल के, जग अपना कर लेय ।। 12।।

चंदन भुजंग संग में रहे, सज्जन संग भी दुष्ट रहे ।
दुष्ट तजे ना दुष्टता, सज्जनता उसमें रहे ।।13।।
मानव ढूंढा फिरै है, मक्का तीर्थ धर्म स्थान ।
अंतर को टटोल करके , उसे पल भर में पहिचान ।।14।।

धन – धान्य कोठी बंगले, पीछे क्यों है भाग रहा ।
बुलावा मौत का जब आया, सब कुछ यही है पड़ा रहा।।15।।
मेरी–मेरी तू कर रहा, तेरा ना कुछ भी होय ।
जब हंस तेरा उड़ गया, एक घड़ी ना राखे कोय ।। 16।।

दुर्जन संग ना कीजिए, करिये गुरू का साथ ।
शिव मारग दिखलायेंगे, पकड़िये गुरू का हाथ ।।17।।
धूप छांव की तरह ही, दुःख सुख है एक समान ।
हर्ष शोक में भटक रहा, दोनों समझों एक समान ।।18।।

लाख दुष्ट का भला करो, दुष्ट न जाने प्रीत ।
दूध भुजंग पिलाइये, विष बदले में ही दीत ।।19।।
बेटी बेटा नार ओ यार, झूठा सारा परिवार ।
जब तक पल्ले दाम है, तब तक ही नाम उचार ।।20।।

सुख की खान जगत में, एक धर्म ही जानिये ।
सुख में जो है धर्म किये, दुःख काहे को लाइये ।।21।।
रत्नों में एक रत्न है, शील रत्न की खान ।
ब्रह्मलोक की सम्पदा, शील ही मानियो जान ।।22।।

दुनियां में सब आये रहे, राजा रंक फकीर ।
सबका एक अंजाम है, जब खीचें काल लकीर ।। 23 ।।
गुण अपने नहीं देखिये, पर औगुन ना घ्यान ।
अवगुन अपने सुधारिये, रख परगुण पर ध्यान ।। 24 ।।

अपने दोष बखानिये, सुधरे बिगडे काज़ ।
जीवन सद्‌गुण धारिये, तज कर लोक की लाज ।।25 ।।
जो विपदा धीरज धरै, गुण उसके हैं महान ।
इतराये जो सुख नहीं, ये लक्षण है विद्धान ।।26 ।।

शनैः शनैः नहीं मिलत है, जनम मनुष्य का मान।
फल पक कर जो गिर गया, फिर डाल पे लगे न जान।।27 ।।
नहीं प्रभु को ध्यावते, प्रभुता फिकर जो होय ।
तज प्रभुता प्रभु ध्यावे, दास प्रभु का होय ।।28 ।।

पोखे तन को रात दिन, नहीं सगा किसी का होय ।
चेतन तन से जब वहे, बेगाना तन होय ।।29 ।।
तन साथ नहीं जात है, आत्म को ही जान ।
तन बदलता वस्त्र को, आत्म संग में जान ।।30 ।।

घड़ी दिन रात चलत है टिक टिक करती रहती है ।
घड़ी पल–पल गुजरती, लौट के फिर ना आती है ।।31 ।।
मान जो लक्ष्मी का करै, बिन कारण है मरता ।
क्षण में जो लक्षाधिपति , पल दूजा रंक बना करता ।।32 ।।

धन दौलत उसको कहते, दूजे के जो काम आये ।
पद उसका ही तो पद है, आंसू रोते के पुछवाये ।।33 ।।
धनिक सदा ही अधम है, दीन के काम ना आये ।
वह जन अगले जनम मे, धन को कभी ना पाये ।।34 ।।

नाम जपत सुख होत है, नाम ही कष्ट निवार ।
नाम से शिवपुर जात है, नाम ही जन्म सुधार ।।35।।
सच्चाई को तजे नही, बन जावे धन कुबेर ।
सच का दामन थाम लें, मिटा ले भव–भव फेर ।।36।।

दो रस रसना में बसे, इक अमृत दूजा विष पान ।
सत बोले अमृत करै, असत है विष की खान ।।37।।
हरि–हरि को रटता वंदे, वंदो से नफरत तू करता ।
कैसे तुझको वीर मिलेगा, वंदे से जब प्यार न करता।।38।।

सुख तो नहीं खाने पीने में, नहीं पत्नि में सुख को जान।
धर्म कर्म में असली सुख है, नहीं यश मान में तू सुख मान।।39।।
जन्मे मरे अकेला चेतन, सुख दुख को भोगन हारा ।
दुनिया की क्या बात करत है, ये शरीर भी नही तुम्हारा।।40।।

क्षमा मार्दव आर्जव तो है, सत्य शौच संयम सुखखान।
तप त्याग आकिंचन, ब्रह्मचर्य देते मोक्ष महान ।।41।।
अभी समय ध्याले धर्म को, हो जावेगा बेड़ा पार।
कुंआ आग लगने पे खोदे, नहीं सरेगा तेरा कार।।42।।

संत और पारस पत्थर में, अंतर भारी जान।
लोहे को सोना करे, संत करत है आप समान।।43।।
गुरू वाणी बसाईये उर में, कर अपना कल्याण।
सीख उनकी को मान ले, खुद होवे कल्याण ।।44।।

धन कमाया पाप से, काम तेरे नहीं आये ।
अंत समय क्या जीव को, धन अपार बचाये।।45।।
सद्गुरू आये जगत में, मानव को चेताने के लिये।
ध्यान सीख पर राखिये, शिवपुर जाने के लिये।।46।।

छोड़ सौ काम भोजन करें, छोड़ हजार नहाये।
लक्ष काम छोड़ दान दें, तज करोड़ हरि ध्याये।।47।।
सत्गुरू सच्चे गुणों को, जीवन में उतारिये ।
स्वर्ण समान संयम है, आभूषण में ढालिये।।48।।

पुण्य तिजोरी संचिये, काम अंत में आये।
संयम जीवन राखिये, पाप नहीं मन आये।।49।।
नश्वर धन पे मान करे, साथी किसी ना होय।
सदकर्म अगर संचे, जीवन सफल है होय।50।।

आलस को तो त्यागिये, शत्र प्रमाद को मान।
विद्या क्षीण प्रमाद से, सुख सम्पति की हान।।51।।
तन पवित्र कियो, धन सार्थक दियो धान।
मन पवित्र हरि भजन से, सब विध हो कल्याण ।।52।।

पहले बोया अब काटा, है भोगो को भोग रहा ।
अब तो ऐसी करनी कर, पर भव में भी भोग रहा ।।53।।
धर्म अपनाना नहीं प्रयास, धन से बगलगीर हुआ।
लोभ मोह को तज के देखो, पल में दुख से दूर हुआ ।54।।

सुंदर हाथों का क्या लाभ, गिरे को गर नहीं उठाये।
दान धर्म नहीं स्वार्थ हेतू, भव भवमें सुख पाये।।55।।
यदि जीवन में सुख चाहे, कम बोले कम खायें।
जीवित रहने को खाना, मीठे वचन कहाये।।56।।

अधिपति देशों को जीता, चक्रवर्ति कहलाये।
स्वंय को वास्तव में जीत के, तू है वीर कहाये।।57
पूर्व जन्म शुभ कर्म किये, तूने नर भव पाया ।
ऐसी करनी कर देखो, तू ना फिर भव को पाया ।।58।।

धर्म पे फिर भी डटे रहो , अगर मिले तुम्हें हान।
ज्ञान चक्षु को खोल के देखो, नहीं होगा हान का भान।।59।।
सुख और दुख दो कर्म है, भव्य जीव तू मान।
जीवन में सुख चाहिये, पर को दुःख न देता जान।।60।।

धन घटत नहीं बढ़त है, लगा बहुजन हिताय।
नदि नहीं जल पीत है, चाहे जितना निकाय।।61।।
काया ज्यूं ज्यूं पोखता, त्यूं त्यूं रोग लगाय।
जनम सफलता चाहता, जप तप दान लगाय।।62।।

न गया कुछ ना गया, बल गया कुछ तो गया।
घर संयम चला गया, कंगाल फिर तू हो गया।।63।।
लूट खसाट करके तू, हो गया धनवान ।
ज्ञान की दौलत लूट ले, हो जावे कल्याण ।।64।।

जब तू है संसार में आया, जग हंसा तू रोया ।
जग हित ऐसा करके जा, तू हंसे जग रोया ।।65।।
सोते डरते खाते पीते, मैथुन पशु है करते।
ये सब तू भी गर करे, भेद पशु नहीं धरते।।66।।

ये तन मल का ढेर है, नव द्धार बहे घिनकारीं।
पल छिन में ही विनश जाये, क्यों करता इससे यारी।।67।।
चिंता से ही दुःख है बढता, चिंता है शमशान।
जीते जी चिंता खाये, चिन्ता चिता समान।।68।।

स्वर्ण पात्र कुछ ना कहे, कांस्य करे चितकार।
गुण वाले बोले नहीं, मूरख करै झंकार।।69।।
योगासन से तन बना, प्रणायाम मन वश करै।
आत्म चिंतन स्वाध्याम से, आत्म का कल्याण करें।।70।।

नहीं छोटा पर को समझिये, हस्ती बल चीटीं हर लेंय।
काम आवे तलवार नहीं, काम सूई कर देय।।71।।
खटटे मीठे रस है दोनों, क्यों विष पान कराय।
पीना यदि तुम चाहो तो, पीना कोध बताय।।72।।

जो तुम को उपलब्ध है, कर उसमें संतोष।
अधिक चाह में चला गया, फिर क्या होगा दोष।।73।।
नहीं ठिकाना पल छिन का, तन मिटटी में मिल जाये।
अपना जन्म सुधार ले बंदे, गया समय नहीं आये।।74।।

आके सिकंदर चला गया, तेरी क्या है बिसात ।
रावण तो था महाबलि, सदा रहा नहीं साथ ।।75।।
जो हिंसा से जग को जीतते, वीर नहीं कहलाते है ।
मन को जो भी जीत हैं लेते, महावीर कहलाते है ।।76।।

विषयों में फंसकर मानव, जीवन को व्यर्थ गंवाया है।
दुलर्भ नर भव पाकर के भी, हाथ नहीं कुछ आया ।।77।।
जग में तो तू है मुसाफिर, आकर के चला जाता है।
अगर प्रभु का नाम सिमर ले, सद्गति को तू पाता है।।78।।

नर तन तेरा है अनमोल, क्यों विषयों में रहा है डोल।
करना है सो जल्दी कर ले, होगा पल में खत्म ये खेल।।79।।
पहले जो करनी कर बैठा, इस भव में है भुगत रहा ।
अब इस भव में जो कर रहा, आरों को वही भर रहा ।।80।।

बालपना गया यौवन भी, बुढापे में क्या खाक जिया।
तेल खत्म हुआ दीपक में, टिम टिमा कर बुझा दिया।।81।।
भव भव के बंध कटेंगे, प्रभुशरण गर आया।
गतियों में था दुःखी हुआ, नहीं कर्मो से घबराया।।82।।

भटका चौरासी योनि में, भेद तेरा नहीं पाया।
गतियों में था दुःखी हुआ, नहीं कर्मो से घबराया ।।83।।
सभी अधिकारी सामने, हर सिफारिश है चलती।
यमदूत के आगे किसी की, नहीं सिफारश है चलती।।84।।

झूठा जग झूठा संसार, क्यों इसमें तू रम जावे।
अंत समय जब आयेगा, कोई नही तो कामआवे।।85।।
शुद्ध बुद्ध अवरूद्ध है तू, कर चेतन का ध्यान।
समय निकल जाने पर तू, नहीं कर सकेगा ध्यान।।86।।

मात पिता सुतनार हैं, सब मतलब के यार।
जब चेतन तन से निकला, तब परखें सब यार।।87।।
मनुख जनम पाकर के, विषयों में है खोता।
जैसे सोने के हाथी पर, लकड़ी को है ढोता।।88।।

नैया भंवर के बीच है, क्यो ना तट पे लगाये।
प्रभु का ध्यान करके तू, बेड़ा पार लगाये।।89।।
कर्मन की गति न्यारी, किसी से टरे नहीं टारी।
विषयों में फंस के हारी, फिर क्यों तू रोवन हारी।।90।।

मनुष्य जन्म पाकर के तूने, भवसागर ना पर लगाया ।
मोह नींद को दूर भगा दे, सम्यक् दर्शन ज्ञान कराया।।91।।
धन दौलत सम्पति सारी, दुख का है बस एक निशान।
अंत समय में काम न आवे, छोड़ दे इस का ध्यान ।।92।।

तन तो मल का ढेर है, क्यों इस पर तू इतराये ।
देकर धोखा जायेगा, काम नहीं कोई आये ।।93।।
महान मानव बने कर्म से, ये तू अब ले जान ।
माया चक्कर छोड़ सभी, खुद को तू पहचान ।।94

सच्चे सदा रहो जीवन में, हाथ से सच्चे जान ।
शील के सच्चे वाणी सच्चे, रहो कान से सच्चे मान ।।95
मनन करे चिंतन करे, गर चाहे कल्याण ।
बंद आँख पीछे हटे, यह है पशुओं का काम ।।96।।

ज्ञान परिश्रम से मिलता, ज्ञान श्रद्धा से मिलता है ।
अपनी निंदा पर प्रशंसा, से ही ज्ञान तो मिलता है।।97।।
सेवा दुनिया की करो, नहीं घृणा अंपग करो ।
कृपा करो पागल बालक, जनम सफल अपना करो ।।98।।

कान का भूषण शास्त्र है, हाथ का भूषण दान ।
परोपकार में तन लगे, वाणी भूषण सच्चा मान ।।99।।
शतक भाव मन में धरों, माया का तुम त्याग करो ।
कर्मो पर विजय प्राप्त करो, नैया भव से पार करो।।100।।

छोटी बच्ची निर्जरा, जन्म दिवस आशीष देओ ।।
दीर्घायु स्वस्थ जीवन में, धर्म लाभ आशीष देओ ।।101।।

श्रेयाँश कुमार जैन
216/8 तालाब तिल्लो
जम्मू तवी–(J&K)
09419100743

